IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जयपुर जनपद में तीज त्यौहार के संदर्भ में सांस्कृतिक पर्यटन का विकास

शोधार्थी का नाम : प्रवीण कुमार शर्मा
विभाग का नामः भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

सारांश

वर्तमान में राजस्थान जैसे प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों वाले राज्य में पर्यटन क्षेत्र का विकास मुख्य रूप से सांस्कृतिक पर्यटन पर निर्भर करता है। सांस्कृतिक पर्यटन से तात्पर्य लोगों का अपने निवास स्थान से दूर सांस्कृतिक आकर्षणों की ओर गमन है ताकि वे अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए नयी सूचना और अनुभव एकत्रित कर सके। प्रस्तुत शोध पत्र जयपुर जनपद में आयोजित किये जाने वाले तीज त्यौहार के संदर्भ में सांस्कृतिक पर्यटन के विकास पर प्रकाश डालता है। इस शोध का उद्देश्य तीज की शाही सवारी के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों व पर्यटन हेतु व्यवस्थागत कारकों के प्रति पर्यटकों के संतुष्टि स्तर का पता लगाना है। जयपुर के त्यौहार पर्यटकों के सामने जन–समुदाय के रीति–रिवाज, विचार, परम्पराएँ, मूल्यों और सामाजिक व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक पर्यटन, अभिगम्यता, सांस्कृतिक संधारणीयता, सैटिशफैक्शन इन्डेक्स।

परिचय

राजस्थान अपने गौरवपूर्ण इतिहास, विशिष्ट संस्कृति, प्राकृतिक सुषमा उच्च श्रेणी की शिल्पकलाओं से परिपूर्ण चतुरंगी महलों तथा मंदिरों व रंग–बिरंगे मेलों, उत्सवों व त्यौहारों के कारण पर्यटकों का प्रमुख आकर्षक केन्द्र रहा है। राजस्थान राज्य की भौगोलिक विविधता ने सांस्कृतिक विविधता को उत्पन्न किया है। जयपुर जनपद में तीज त्यौहार की शाही सवारी के प्रति पर्यटकों में एक विशेष उत्साह रहता है।

शोध–क्षेत्र

जयपुर जनपद राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। जयपुर जनपद $26^0 22'$ एवं $27^0 52'$ उत्तरी अक्षांशों एवं $74^0 55'$ एवं $76^0 50'$ पूर्वी देशांतरों के बीच स्थित है। जयपुर जिले का क्षेत्रफल 11,143 वर्ग कि.मी. है।

साहित्य का पुनरावलोकन

- कृष्णलाल, एस.पी. गुप्ता, महुआ भट्टाचार्य : श्ब्नसजनतंस जवनतपेउ पद प्दकपं डनेमनउेए उवदनउमदजे – ।तज ;जेमवतल ंदक च्तंबजपबमद्धश ;2010द्ध यह पुस्तक सभी बड़े तीर्थस्थलों और त्यौहारों का वर्णन करती है। यह पश्चिमी पर्यटकों का भारत के प्रति विशेष आकर्षण को बताती है, जो मुख्य रूप से भारतीय संस्कृति के उन पहलुओं में रूचि रखते हैं जो जीवन को शारीरिक, आध्यात्मिक, मानसिक और नैतिक स्तरों पर गहरी अभिव्यक्ति देते है।
- डैलन जे. तिमोथी : ष्ब्नसजनतंस भ्मतपजंहम ंदक ज्वनतपेउ रू ।द प्दजतवकनबजपवद ;ेचमबजे वि ज्वनतपेउ ज्मगजेद्धष ;2011द्ध यह पुस्तक पर्यटन मुद्दों, वर्तमान वाद–विवाद, संकल्पनाओं एवं परम्पराओं की व्यापक समीक्षा प्रदान करते हुए पर्यटन के विशाल रूप से संबंधित है।
- वनाजा उदय : श्ब्नसजनतंस जवनतपेउ ंदक चमतवितउपदह ंतजे वि ।दकीतं च्तंकमी रू च्तवेचमबजे ंदक च्मतेचमबजपअमेश ;2012द्ध यह पुस्तक अपने सात अध्यायों में आंध्र प्रदेश में सांस्कृतिक पर्यटन और परफोर्मिंग आर्ट्स के विभिन्न पहलुओं को संग्रहित करती है।
- रजाक राज, केविन ग्रिफिन : त्मसपहपवने जवनतपेउ ंदक च्पसहतपउंहम डंदंहमउमदज ।द पदजमतदंजपवदंस चमतेचमबजपअम प्दक म्कपजपवद ;2015द्ध यह पुस्तक धार्मिक पर्यटन की केन्द्रीय भूमिका एवं तीर्थस्थलों के प्रबंधन के दूसरे पहलुओं के साथ इसके संबंधों की समीक्षा करती है।

उद्देश्य

- सांस्कृतिक पर्यटन से संबंधित विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में सैटिशफैक्शन इन्डेक्स ज्ञात करना।

शोध प्रविधि

फील्ड सर्वे के दौरान यादृच्छिक स्तरित सैम्पलिंग मैथड से चयनित पर्यटकों के साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक आंकड़े संग्रहित किये गये हैं।

पर्यटकों के फीडबैक को अंकों के आधार पर चार वर्गों में बांटा गया, ये सैटिशफैक्शन के चार स्तर हैं–

म्ाबमससमदज	:	9–10 अंक	ैजपेबिजवतल	:	5–6 अंक
ळववक	:	7–8 अंक	न्देंजपेबिजवतल	:	1–4 अंक

उपर्युक्त फीडबैक से सैटिशफैक्शन इण्डेक्स निकालने हेतु निम्न विधि का प्रयोग किया गया–

$$Sti = \sum Mi \times Ni/N$$

ैीमतमए

ैजप त्रैजपेबिजपवद पदकमग वित पजी बिजवत

डप त्र छनउमतपबंस अंसनमे वित जीम चंतजपबनसंत समअमस वि जपेबिजपवद वित जीम पजी बिजवत

छप त्र छनउइमत वतिमेचवदकमदज कमतपअपदह जीम चंतजपबनसंत समअमस वि जपेबिजपवद वित जीम पजी बिजवतण

छ त्र ज्वजंस दनउइमत वतिमेचवदकमदजे वित जींज बिजवत वित ंसस समअमस वि जपेबिजपवदण

सांस्कृतिक पर्यटन से संबंधित विभिन्न पहलुओं हेतु सैटिशफैक्शन इन्डेक्स तैयार कर तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

जयपुर भ्रमण के लिए सर्वोत्तम समय अक्टूबर से मार्च के बीच हैं इस समय गर्मी का प्रकोप नहीं रहता है व अधिकांश त्योहार इसी अवधि में आते है। तीज की शाही सवारी के दौरान विविध सांस्कृतिक–धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है ताकि पर्यटकों को पूर्ण पर्यटन अनुभव उपलब्ध कराया जा सके ।

जयपुर में तीज का त्योहार

तीज का त्योहार हरियाली के वातावरण में मनाया जाता है। श्रावण शुक्ला तृतीया को बालिकाएँ एवं नवविवाहित वधुएँ इस त्योहार को मनाती है। इस त्योहार के अवसर पर राजस्थान में स्थान–स्थान पर झूले लगते हैं। इस त्योहार के आस–पास खेतों में बुवाई भी शुरू होती है। मोठ, बाजरा, ग्वार फली आदि की बुवाई के लिए कृषक इसी उत्सव पर वर्षा की महिमा व्यक्त करते हैं। गुलाबी नगरी में हरियाली तीज का त्योहार मनाया जाता है। इसे श्रावणी तीज (सावन तीज) के नाम से भी जाना जाता है। यह त्योहार मानसून के आरम्भ का स्वागत करने के लिए मनाया जाता है। यह पार्वती माता को समर्पित है। यह त्योहार मातृ प्रकृति को सूखाग्रस्त क्षेत्र में वर्षा हेतु समर्पित है। जब शहर की पहाड़ियाँ हरियाली की चादर ओढ़ लेती और बारह मोरियों के जल से तालकटोरा और राजामल के तालाब लबालब हो जाते थे तब यह त्योहार मनाया जाता था। सुहागन महिलाएँ लहरिया पहनकर अखंड सौभाग्य के लिए तीज माता का पूजन करती है।

तीज माता की शाही सवारीः रियासत काल से परंपरागत तरीके से निकाली जाने वाली दो दिवसीय तीज माता की सवारी सिटी पैलेस से निकाली जाती है। अगले दिन बूढ़ी तीज के रूप में सवारी निकलती है। तीज माता की शाही सवारी सिटी पैलेस (मानचित्र में लैण्ड मार्क श्ब्ब्) में जनानी ड्योढ़ी से निकलकर त्रिपोलिया गेट, त्रिपोलिया बाजार, छोटी–चौपड़ (नोड़ श्ंश्), गणगौरी बाजार, चौगान स्टेडियम होते हुए तालकटोरा में जाकर समाप्त होती है।

KEY PLAN OF WALLED CITY JAIPUR

(तीज की शाही सवारी का रूट मैप)

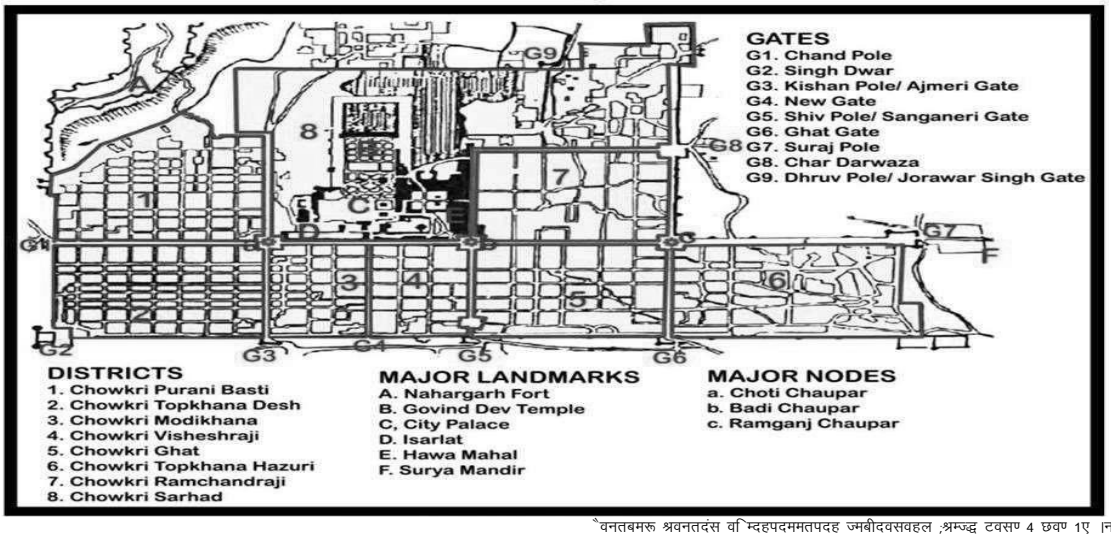

ैवनतबमरू श्रवनतदंस व िम्दहपदममतपदह ज्मबीदवसवहल ;श्रम्ळद्ध टवसण 4 छवण 1ए ।नहनेज 2016 चण 47

शाही सवारी में आगे हाथी पर पंचरंगा का झंडा उसके पीछे तोप गाड़ी, सुसज्जित रथ, घोड़े, ऊँट, बैलगाड़ी का लवाजमा चलता है। इन सभी घोड़े, ऊँट, बैलों को सजाया जाता है। तीज माता की शाही सवारी में सांस्कृतिक छटा बिखरते लोक कलाकार राजस्थानी संस्कृति का परिचय कराते हैं। लोक कलाकार कच्छी घोड़ी, कालबेलिया, गैर, चकरी, घूमर नृत्य करते हैं। बहरूपिये विभिन्न हिन्दू देवी–देवताओं, भीमराव अम्बेड़कर, नरेन्द्र मोदी के रूप में अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। कुछ लोक कलाकार अलगोजा का वादन करते हैं। एक लोक कलाकार अपने मुँह में एक विशेष द्रव्य लेकर मुँह से 'आग की लपटें' निकालता है। इस शाही सवारी में जयपुर के प्रसिद्ध बैण्ड जैसे जिया बैण्ड, अशोका बैण्ड, सुन्दर बैण्ड, ताज बैण्ड भी अपनी प्रस्तुति देते हैं। अंत में, तीज माता का रथ निकलता है, जिसके पीछे लहरिया पहनी हुई महिलाएँ कलश यात्रा निकालती है। पिछले कुछ वर्षों से तालकटोरा की पाल पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। तालकटोरा तालाब व पौण्डरिक पार्क को लाइटिंग से सजाया जाता है।

पर्यटकों हेतु व्यवस्थाएँ : त्रिपोलिया गेट के सामने हिन्द होटल की दुकानों की छत पर देशी–विदेशी पर्यटकों के बैठने हेतु विशेष व्यवस्था की जाती है। ताकि वे फोटोग्राफ ले सके और एक विशेष समय पर एक ही स्थान पर राजस्थानी संस्कृति के विविध पक्षों का जीवंत प्रदर्शन देख सके। पर्यटकों को शाही सवारी के प्रत्येक पक्ष, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की जानकारी देने हेतु हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कॉमेन्ट्री की जाती है। पर्यटकों का उत्साह इतना चरम पर होता है कि अत्यधिक भीड़ भी उन्हें प्रभावित नहीं करती वे बेरिकेड्स के पास तथा सड़क पर बैठकर लोककलाकारों के नजदीक जाकर इस शाही सवारी का आनंद उठाना चाहते हैं।

तीज त्योहार की शाही सवारी से संबंधित कारकों के सैटिशफैक्शन इण्डेक्स का विश्लेषण

तीज की शाही सवारी हेतु सैटिशफैक्शन इन्डेक्स की गणना

;छपद्ध

क्र. सं.	कारक	Excellent	Good	Satisfactory	Unsatisfactory
1.	अभिगम्यता; ।बबमेपइपसपजलद्ध	4	22	66	8
2.	सुरक्षा व्यवस्था	7	42	30	21
3.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	24	41	32	3
4.	पर्यटकों हेतु व्यवस्थाएँ	0	27	31	42
5.	गाइड सुविधा व कमेन्ट्री	8	31	31	30
6.	पर्यटकों की भागीदारी	0	0	16	84
7.	पार्किंग सुविधा	0	10	52	38
8.	स्वच्छता	0	9	71	20

स्रोतः शोधार्थी द्वारा संकलित

(Mi)

क्र. सं	कारक	Excellent	Good	Satisfactory	Unsatisfactory
1.	अभिगम्यता; ।बबमेपइपसपजलद्ध	9	7.45	5.39	3.125
2.	सुरक्षा व्यवस्था	9	7.42	5.43	3.52
3.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	9	7.51	5.62	4

4.	पर्यटकों हेतु व्यवस्थाएँ	0	7.37	5.35	2.80
5.	गाइड सुविधा व कमेन्ट्री	9	7.64	5.61	3.03
6.	पर्यटकों की भागीदारी	0	0	5.43	1.38
7.	पार्किंग सुविधा	0	7.6	5.57	2.42
8.	स्वच्छता	0	7.55	5.28	3.3

स्रोतः शोधार्थी द्वारा संकलित एवं आंकलित

Satisfaction Index for ith Factor

क्र.सं.	कारक	Satisfaction index	Rank
1.	अभिगम्यता ;।बबमेपइपसपजलद्ध	5.806	3
2.	सुरक्षा व्यवस्था	6.11	2
3.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	7.15	1
4.	पर्यटकों हेतु व्यवस्थाएँ	4.82	6
5.	गाइड सुविधा व कमेन्ट्री	5.73	4
6.	पर्यटकों की भागीदारी	2.028	8
7.	पार्किंग सुविधा	4.57	7
8.	स्वच्छता	5.08	5

स्रोतः शोधार्थी द्वारा आंकलित

1. सांस्कृतिक कार्यक्रम–सांस्कृतिक कार्यक्रम 7.15ैजपेबिजपवद प्दकमग के साथ तालिका में प्रथम त्ंदा पर है। यहाँ शाही सवारी में शाही लवाजमे में सजे–धजे ऊँट, घोड़े, हाथी के साथ लोककलाकारों द्वारा लोकनृत्य, लोकवाद्य, लोकनाट्य का प्रदर्शन किया जाता है, जो पर्यटकों द्वारा सर्वाधिक पसंद किया जाता है।

आरेख

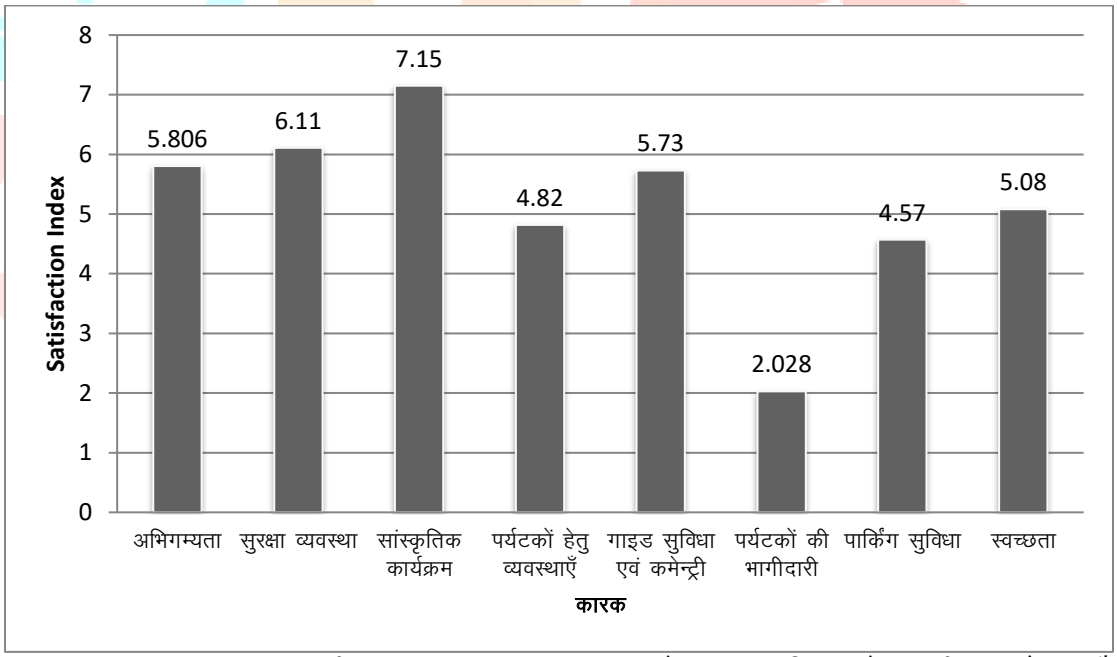

2. सुरक्षा व्यवस्था–इस तत्व की 6.11ैजपेबिजपवद प्दकमग के साथ तालिका में दूसरी त्ंदा है। यहाँ किसी भी तरह की दुर्घटना से बचने के लिए पुलिस बल शाही सवारी के मार्ग में तैनात रहता है। सामान्यतः भीड़ में भी पर्यटकों के साथ अपराध नहीं देखे गये हैं।

3. अभिगम्यता–इस तत्व की 5.806ैजपेबिजपवद प्दकमग के साथ तालिका में तीसरी त्ंदा है। इसके अन्तर्गत तीज की शाही सवारी का मार्ग व परिवहन के साधनों का विश्लेषण किया गया हैं यह मार्ग शहर की चार दीवारी के भीतर है व यहाँ तक पहुँचने हेतु बस, कैब, टैक्सी सभी प्रकार के परिवहन के साधन आसानी से सुलभ है।

4. गाइड सुविधा व कमेन्ट्री–इस तत्व की 5.73ैजपेबिजपवद प्दकमग के साथ तालिका में चौथी त्ंदा है। यहाँ द्विभाषी हिन्दी अंग्रेजी में कमेन्ट्री होती है। इसके द्वारा यहाँ होने वाली प्रत्येक गतिविधि को स्पष्ट किया जाता है, ताकि पर्यटकों को लाइव टेलिकास्ट जैसा अनुभव हो। परन्तु हिन्दी–अंग्रेजी भाषा पर्यटकों के अलावा अन्य भाषी पर्यटकों हेतु पर्याप्त नहीं है। साथ ही विभिन्न पर्यटक दलों हेतु पर्याप्त गाइड भी नहीं होते हैं।

5. स्वच्छता–यह तत्व 5.08ैजपेबिजपवद प्दकमग के साथ पांचवीं त्ंदा प्राप्त होता है। शाही सवारी के मार्ग में व दुकानों के सामने बरामदों में स्वच्छता का स्तर औसत है।

6. पर्यटकों हेतु व्यवस्था–इस तत्व की 4.82 ैजपेबिजपवद प्दकमग के साथ तालिका में छठी त्ंदा है। यहाँ त्रिपोलिया गेट के सामने दुकानों की छतों पर बैठाया जाता है। परन्तु आधे से भी ज्यादा पर्यटकों को शाही सवारी को देखने हेतु सड़क पर भीड़ में खड़ा रहना पड़ता है। अतः उपर्युक्त व्यवस्थाएँ पर्याप्त नहीं है।

7. पार्किंग सुविधा–इस तत्व की 4.57 ैजपेबिजपवद प्दकमग के साथ सातवीं त्ंदा हैं। दुकानों के सामने पार्किंग की सुविधा है किन्तु स्थानीय लोगों की अत्यधिक संख्या होने के कारण पार्किंग की सुविधा अपर्याप्त रहती है। हालांकि रामनिवास बाग में भूमिगत पार्किंग की व्यवस्था की गयी है, परन्तु उससे शाही सवारी का मार्ग लगभग 1.5 किमी. दूर रहता है।

8. पर्यटकों की भागीदारी–इस तत्व की 2.028 ैजपेबिजपवद प्दकमग के साथ तालिका में आठवीं त्ंदा है। इस तरह की पर्यटकों की भागीदारी सामान्यतः किसी मेले या उत्सव में देखी जाती है, परन्तु यहाँ 1.5–2 घंटे के लिए तीज की शाही सवारी का कार्यक्रम होता है और स्थानीय निवासियों के कारण भीड़ अत्यधिक रहती है। साथ ही पर्यटक भीड़ में अपनी सुरक्षा को लेकर भी सचेत रहते हैं। ऐसी स्थिति में पर्यटकों की त्योहार में भागीदारी की संभावना कम रहती है।

निष्कर्ष

तीज की सवारी के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम, कमेन्ट्री व गाइड सुविधा, सुरक्षा व्यवस्था, अभिगम्यता कारकों के प्रति पर्यटकों की संतुष्टि स्तर अपेक्षाकृत ज्यादा है। जबकि पर्यटकों हेतु व्यवस्थाएँ (बैठने व खड़े रहने हेतु) पर्यटकों द्वारा त्योहार में भागीदारी, स्वच्छता व पार्किंग सुविधा जैसे कारकों के प्रति सैटिस्फैक्शन इण्डेक्स अपेक्षाकृत कम है। लोक कलाकारों द्वारा लोक कलाओं का प्रदर्शन जयपुर जनपद की सांस्कृतिक संधारणीयता ;ब्नसजनतंस ैनेजंपदंइपसपजलद्ध में भी सहायक है।

संदर्भ

- प्रभाकर, मनोहर (1972) : कल्चरल हैरिटेज ऑफ राजस्थान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ.स. 15, 55–57
- सिंह, महेन्द्र (1991): राजस्थान में पर्यटन उद्योग अभी बाकी है कनिष्का पब्लिकेशन्स , नई दिल्ली, पृ.स. 58–60, 80
- शर्मा, एच.एस. शर्मा, एम.एल. (2010): राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ.स. 254, 256
- गुप्ता, एस.पी., कृष्ण लाल, भट्टाचार्य, महुआ (2010): Cultural Tourism in India Museums, monuments & Art (Theory and Practice), D.K. Printworld (P) Ltd पृ.स.–201, 294
- तिमोथी, डैलन जे (2011): Cultural Heritage and Tourism : An Introduction (Aspects of Tourism Texts), Channel View Publications, UK, USA, Canada, पृ.स.–384, 385, 390, 395
- उदय, वनाजा (2012): Cultural Tourism and Performing arts of Andhra Pradesh : Prospects and Perspectives, Research India Press, New Delhi, पृ.स.–188–192
- शर्मा, जे.पी. (2012): प्रायोगिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.स. 633–638.
- राज, रजाक ग्रिफिन केविन (2015): Religious tourism and Pilgrimage Managment : An International perspective IInd Edition, CAB International, UK, USA, पृ.स.–103–117
- पर्यटन विभाग, राजस्थान (2016–17, 2017–18, 2018–19) प्रगति प्रतिवेदन,(2016–17), पृ.स.15,44–46, प्रगति प्रतिवेदन, (2017–18) पृ.स .20 प्रगति प्रतिवेदन, (2018–19) पृ.स.21, 66
- शर्मा, गोपीनाथ (2020): राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ.स. 67–68